ISSN : 2229-4767

अभिनव क़दम-26

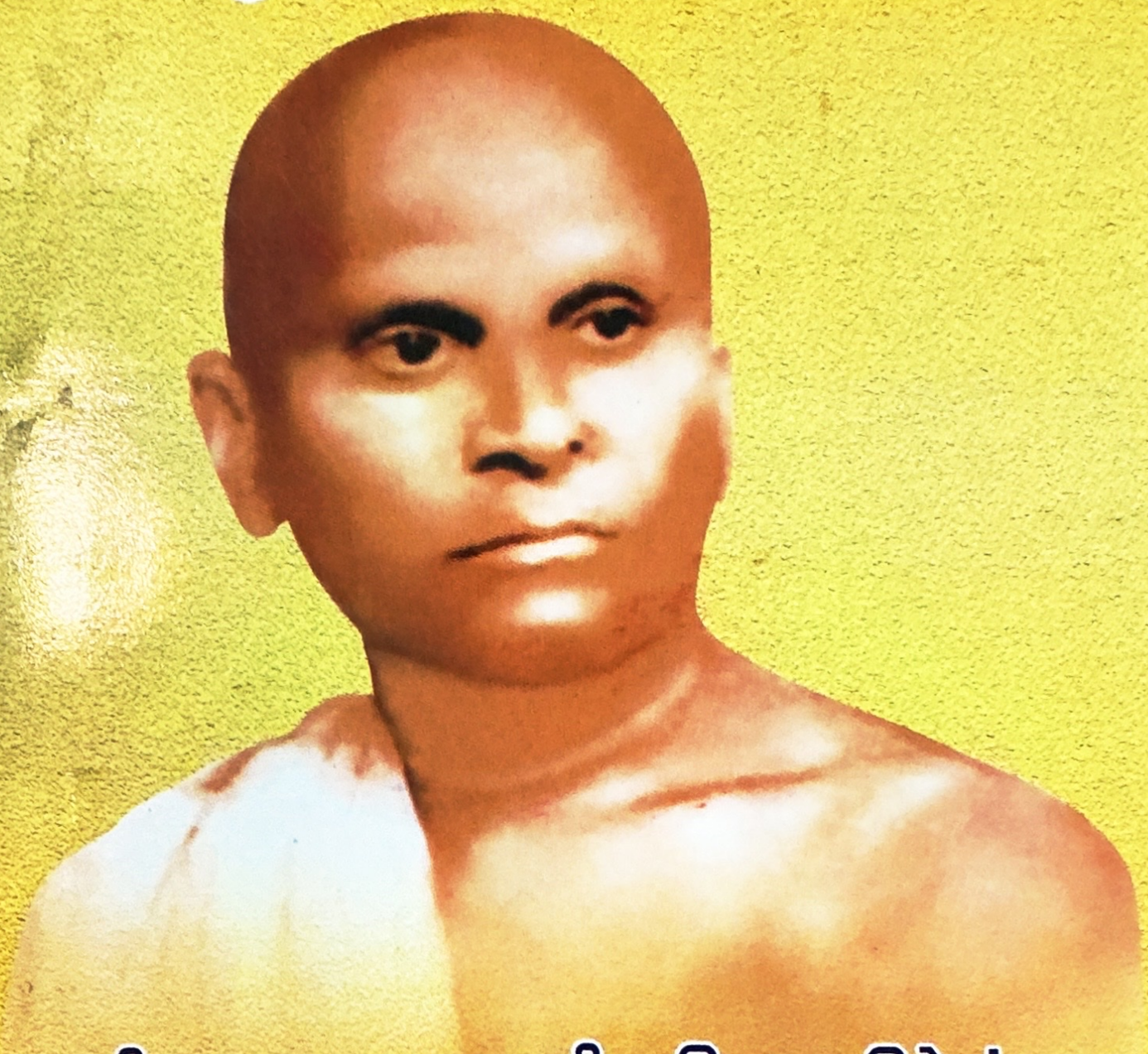

स्वामी सहजानन्द सरस्वती : किसान विशेषांक-1

महारुद्र का महाताण्डव

अभिनव क़दम -26

यह अंक
अदम गोण्डवी
की स्मृति को समर्पित

(जन्म : 22.10.1947 - मृत्यु : 18.12.2011)

ढो रहा है आदमी काँधे पे खुद अपनी सलीब
ज़िन्दगी का फ़लसफा जब बोझ ढोना हो गया।

—अदम गोण्डवी

अभिनव कदम के चिर प्रतीक्षित स्वामी सहजानन्द सरस्वती विशेषांक को दो खण्डों में प्रस्तुत करते हुए मैं उन पत्रिकाओं व सम्पादकों के प्रति आभार ज्ञापित करना चाहूँगा जिनके सहयोग व साभार से ली गई सामग्री के बिना यह विशेषांक दे पाना सम्भव नहीं था। हंस, कथन, कथादेश, वसुधा, साम्य, समकालीन जनमत, लोकयुद्ध, मुक्ति संघर्ष, नन्दीग्राम की डायरी, विहार के खेत खलिहानों के धधकते सवाल, राहुलवाङ्मय व स्वामी सहजानन्द रचनावली के सम्पादक राघवशरण शर्मा का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ।

—सम्पाद

संस्थापक-संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तमचन्द जन संस्कृति के पक्ष में आयोजन

वर्ष : 16 अंक : 26 दिसम्बर 2011 - मई 2012

अभिनव क़दम -26

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय
संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु
संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग
संजय श्रीवास्तव
कमलेश सिंह
संजय राय
राघवेन्द्र प्रताप सिंह
प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

संपर्क :
'प्रकाश निकुंज'
223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)-275101
फोन : 0547–2223113, मोबाइल : 09415246755, 09415241755
ई-मेल : patrika.abhinavkadam@gmail.co

सहयोग राशि
यह अंक : **100.00**
संस्थाओं के लिए : **200.00**
आजीवन सदस्यता : **2000.00**

प्रकाशक : **साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन'** मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)
अक्षर संयोजन : **श्वेता जॉब्स**, बहादुरगंज, इलाहाबाद ▪ मोबाइल : 9451451587
प्रिंन्टिंग : **पुष्पी आफसेट**, बाई का बाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

सम्पादकीय / 7

कविताएँ

1. दलितों का संन्यासी/रामधारी सिंह दिनकर / 9
2. क्या तुम्हें याद है/नागानन्द वात्स्यायन / 10
3. स्वामी सहजानन्द की स्मृति मे/पूनम सिंह / 12
4. वायलार/राम विलास शर्मा/ / 15
5. हेई सम्भालों धान रे/सलिल चौधरी / 16
6. लाल भवानी/नागार्जुन / 17
7. पैतृक सम्पत्ति/केदारनाथ अग्रवाल / 19
8. शान्ति-क्रान्ति का गीत/शंकर शैलेन्द्र / 20
9. तेलगांना/कैफ़ी आज़मी / 21
10. कविता की खेती और खेती की कविता/रविभूषण / 24
11. हाथा मारना/अष्टभुजा शुक्ल / 27
12. मरता-मरता जीता गाँव/हरिपाल सिंह 'अरुष' / 40
13. किसान/अरविन्द अवस्थी / 44

संस्मरण/स्मरण

14. किसानों का यह नेता/रामवृक्ष बेनीपुरी / 46
15. स्वामी सहजानन्द सरस्वती : एक स्मरण/सी. राजेश्वर राव / 49
16. संगठित किसान आन्दोलन के प्रणेता :
    स्वामी सहजानन्द सरस्ती/हरिकिशन सिंह सुरजीत / 51
17. स्वामी सहजानन्द सरस्वती/एन.जी. रंगा/अनु. ऋषिकेश राय / 58
18. किसानों के प्रिय नेता स्वामी सहजानन्द/भोगेन्द्र झा / 60
19. किसानों का सच्चा नेता स्वामी सहजानन्द/किशोरी प्रसन्न सिंह / 63
20. वैज्ञानिक समाजवादी स्वामी सहजानन्द/शीलभद्र याजी / 66

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की कलम से

21. हमारा ध्रुवतारा/सहजानन्द सरस्वती / 69

22. स्वामी सहजानन्द सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण :
बिहार प्रान्तीय संयुक्त किसान सम्मेलन : ढ़काईच / 73
23. स्वामी सहजानन्द सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण : विजयवाड़ा / 94
24. महारुद्र का महाताण्डव/स्वामी सहजानन्द सरस्वती / 111

विरासत :

25. नये भारत के नये नेता : स्वामी सहजानन्द सरस्वती/राहुल सांकृत्यायन / 121
26. नये भारत के नये नेता : यदुनन्दन शर्मा/राहुल सांकृत्यायन / 140
27. नये भारत के नये : कार्यानन्द शर्मा/राहुल सांकृत्यायन / 150
28. किसानों मजदूरों के लिए/राहुल सांकृत्यायन / 163

आलेख :

29. स्वामी सहजानन्द सरस्वती और समाज सुधार की राजनीति/वाल्टर हाउजर / 197
30. स्वामी सहजानन्द का किसान साहित्य/कुबेरनाथ राय / 221
31. कैसा है आज स्वामी सहजानन्द का किसान/अब्दुल बिस्मिल्लाह / 278
32. भारतीय किसान समस्या और सहजानन्द सरस्वती/रामनिल गुंजन / 282
33. स्वामी सहजानन्द और उनकी विरासत : एक टिप्पणी/हितेद्र पटेल / 288
34. स्वामी सहजानन्द और किसान/ब्रजकुमार पाण्डेय / 299
35. किसान सभा आन्दोलन और स्वामी सहजानन्द की वैचारिकता/कुमार परवेज / 304
36. स्वामी सहजानन्द की क्रान्तिकारी वामपक्षी विचारधारा/त्रिवेणी शर्मा सुधाकर / 312
37. व्यावहारिक मनुष्य क्यों न बना?
सन्दर्भ : सहजानन्द सरस्वती/शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी / 319
38 सहजानन्द का साम्प्रदायिक सद्भाव/श्रीमती सुधा राय / 327
39. किसान नेता सहजानन्द सरस्वती के सहयात्री :
राहुल सांकृत्यायन/विनय कुमार कुशवाहा / 333
40. किसानों का भविष्य और राहुल का अमवारी आन्दोलन/प्रभुनारायण विद्यार्थी / 338
41. किसान संघर्षों के बारे में/डा. जेड. ए. अहमद / 347
42. किसान क्रान्ति की ओर/रजनी पाम दत्ता / 373
43. 1857 के बाद किसान आन्दोलन/के.एन. पणिक्कर / 390
44. 1857 के बाद किसान आन्दोलन/विपिन चन्द्रा / 400
45. सवाल्टर्न अध्ययन और औपनिवेशिक भारत में
कृषि आन्दोलन/शशि भूषण उपाध्याय / 410
46. आधुनिक इतिहास में बिहार का किसान/विनोद मिश्र / 421
47. राष्ट्रीय जन उभार में किसानों की भूमिका/अवधेश प्रधान / 432
48. किसान आन्दोलन का नया दस्तावेज/रामाज्ञा शशिधर / 470

49. किसान-कांग्रेस और स्वतन्त्रता संघर्ष/कपिल कुमार अनु. रामकीर्ति शुक्ला / 501
50. चम्पारन किसान आन्दोलन और गाँधी जी/भवदेव पाण्डेय / 531
51. गाँधी का चम्पारन आन्दोलन/गिरीश मिश्र / 535
52. भारत के प्रमुख किसान आन्दोलन : एक सर्वेक्षण/बी.एन. प्रसाद / 545
53. भारतीय किसान आन्दोलन की प्रवृत्तियाँ और तेभागा आन्दोलन/ऋषिकेश राय / 564
54. पूर्वोत्तर भारत में किसान आन्दोलन/डॉ. श्रुति / 573
55. राजस्थान में किसान आन्दोलन का प्रेरक : बिजौलिया आन्दोलन/जीवन सिंह / 588
56. किसान आन्दोलन - उत्तर प्रदेश, मालाबार और बारदौली/मृदुला मुखर्जी / 600
57. हत भागे किसान/प्रेमचन्द / 613
58. साहूकार का फन्दा/छोटू राम / 616
59. किसान का दुखड़ा/छोटू राम / 619

परिशिष्ट : 1

60. स्वामी सहजानन्द सरस्वती : संक्षिप्त परिचय / 624

परिशिष्ट : 2

61. स्वामी सहजानन्द की रचनाएँ / 627
62. रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र / 628

❑❑

सम्पादकीय

वो कत्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होती

"जो लोग किसान, मजदूरों के संगठन में वर्गयुद्ध और हिंसा देखते हैं, उनसे भी हमें कुछ कहना है। सबसे पहली बात तो यह है कि यदि किसान संगठन जरूरी है, तो यह हिंसा के डर से रोका नहीं जा सकता। हाँ हिंसा को रोकने या कम करने की कोशिश जरूर की जा सकती है। जिन्दगी तो हिंसा से कायम है। साँस लेने में पल भर में करोड़ों किटाणुओं का संहार हो जाता है। तो क्या जीवन का अन्त ही कर दिया जाये? किस काम में हिंसा नहीं होती? लिखने-पढ़ने और बोल-चाल में हिंसा ही हिंसा है, तो क्या सभी काम समेट लिया जाये? भात तो बनता है चावल का और पैदा होता है धान, जिसके ऊपर का तुष (भूसा) हटाना पड़ता है, तो क्या धान की खेती छोड़ दी जाये, क्योंकि चावल पैदा होता नहीं? हाँ यदि निरर्थक या जानबूझ कर कोई हिंसा को उत्तेजना दे, तो यह बात बुरी है।" स्वामी सहजानन्द सरस्वती

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के उक्त विचार को हम विनोद मिश्र की पुस्तक 'विहार के खेत-खलिहान के धधकते सवाल' से जोड़ कर मौजूदा समय में भारतीय कृषि पर गहराते संकट का अहसास कर सकते हैं, जो आज पूरे भारत के किसानों-मजदूरों के सामने ताल ठोंक कर खड़ा है। दैत्याकार देशी-विदेशी कम्पनियों के जबड़े गाँवों की ओर फैलते जा रहे हैं। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पंजाब में किसान आत्महत्याओं के समाचार लगातार आ रहे हैं। पूरे देश में दो लाख चालीस हजार के आस-पास किसान आत्महत्या कर चुके हैं। यह सिलसिला लगतार जारी है। तो फिर क्या होगा सहजानन्द सरस्वती के 'किसान भगवान' का? रास्ता भी वहीं से निकलेगा। हमें पुनः इतिहास के पन्नों को पलटना होगा। **'किसान भगवान'** के संकट के प्रश्न पर एक बार नये सिरे से विचार करने के लिए राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के साथ-साथ चल रहे, भारतीय किसान आन्दोलनों की जाँच-पड़ताल तो करनी ही होगी। साथ ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ-साथ ताल-मेल बैठाकर चल रहे दमनकारी, शोषक-सामन्तों, साहूकारों, जमींदारों की भूमिका को भी रेखांकित करना होगा। इन सारे ज्वलन्त प्रश्नों का उत्तर किसान संग्राम के महानायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती की विचार सरणी में उपलब्ध है, जिन्होंने किसान सभा के माध्यम से पूरे राष्ट्रीय फलक पर किसानों के सवाल को राष्ट्रव्यापी सवाल बना दिया, जिससे ब्रिटिश हुकूमत की चूलें हिल गईं। गाँधी की कांग्रेस और उनके साथ 'स्वराज' आन्दोलन की लड़ाई में शामिल बाबू वर्ग, सामन्त, जमींदार, साहूकार व पूँजीपति वर्ग भी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के 'महारूद्र के महाताण्डव' से भविष्य में होने वाली प्रलयंकारी विभीषिका से काँप उठे थे। गाँधी और उनके सुराजी सहयोगियों को तो सिर्फ 'स्वराज' की भीख की ब्रिटिश साम्राज्य से उम्मीद थी। उन्हें राष्ट्रीय मुक्ति की कोई जरूरत नहीं थी। वे तो गोरे अंग्रेजों की जगह काले अंग्रेजों की सत्ता संरचना में यकीन करने वाले लोग थे। खुद 1920 में कलकत्ता की सभा में—'स्वराज का दारोमदार खेतिहरों पर है' जैसी बात कहने वाले महात्मा गांधी बाद

में चल कर किसान सभा के आन्दोलन से विचलित होने लगे थे। गांधी के लिए पूँजीपति वर्ग, सामन्तवर्ग, जमींदार वर्ग और साहूकार वर्ग का हित सर्वोपरि था। स्वामी सहजानन्द सरस्वती और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस और उनके साथ मुक्तिकामी चेतना में भरपूर आस्था रखने वाली अवाम सम्पूर्ण आजादी चाहती थी। ब्रिटिश हुकूमत के उत्पीड़न से मुक्ति के साथ-साथ सामन्तों, जमींदारों, साहूकारों से किसानों-मजदूरों को मुक्ति दिलाना सहजानन्द सरस्वती और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का लक्ष्य था। यही सपना लेकर भगत सिंह और उनके साथी देश को आजाद कराना चाहते थे।

गांधी जी और स्वराज आन्दोलन कारियों के समक्ष सबसे जटिल प्रश्न था कि देश की 80% जनता तो गाँवों में रहती है। खेती-मजूरी ही उनकी जीविका का आधार है और ऊपर से सामन्तों, जमींदारों, साहूकारों का शोषण, उत्पीड़न। गाँव के किसान-मजदूर तो अपनी मुक्ति पहले सामन्तों, जमींदारों, साहूकारों से चाहते थे, जिनकी लड़ाई किसान सभा के माध्यम से स्वामी सहजानन्द सरस्वती लड़ रहे थे। सुराजी गांधी और उनकी कतार एक तरफ किसान सभा से जुड़ाव व लगाव भी रखती थी, तो दूसरी तरफ किसान सभा की कामयाबी से विचलित होकर किसान सभा के विरुद्ध षड्यंत्र भी करती रही।

गांधी जी का लक्ष्य था कांग्रेस को गाँवों तक पहुँचाना। गाँव के किसानों-मजदूरों को स्वराज आन्दोलन से जोड़ना। बहुत हद तक किसान सभा से जुड़े गाँव के किसान-मजदूर गांधी के स्वराज आन्दोलन से जुड़ भी गये। आजादी हासिल हुई, परन्तु खून से लथपथ। टुकड़ों में बँटी हुई आजादी। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने 15 अगस्त 1947 की प्राप्त आजादी को 'फाँसी दिवस' के रूप में माना।

यहाँ स्वामी सहजानन्द सरस्वती के बहाने भारत के अलग-अलग हिस्सों में चलने वाले किसानों-मजदूरों, जनजातियों द्वारा संगठित रूप से चलाये गये आन्दोलनों को भी नये सिरे से देखने की कोशिश की गई है। अवध का किसान आन्दोलन, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, केरला, बंगाल, असम तथा अन्य भागों में चलने वाले आन्दोलनों को अपनी सीमाओं के भीतर याद करने की कोशिश की गई। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने तो बिहार के बिहटा में अवस्थित सीताराम आश्रम को किसान सभा का केन्द्रीय स्थल ही बना डाला, जहाँ से चल कर पूरे देश में किसान सभा और उसके आन्दोलन की धमक पहुँची।

आज भारतीय किसान की दारूण स्थिति लगातार बद से बदतर होती जा रही है। प्रेमचन्द का 'हतभागे किसान' बहुत ही जटिल स्थितियों से गुजर रहा है। छोटू राम का— 'किसान का दुखड़ा' और ऊपर से 'साहूकार का फंदा' कसता जा रहा है। तब फिर आगे अभी और क्या होने वाला है, सहजानन्द सरस्वती के 'किसान भगवान' के साथ। कब तक होने वाला है 'महारुद्र का महाताण्डव'?

अन्त में स्वामी सहजानन्द सरस्वती के बहाने भारतीय किसान और उसके समक्ष खड़ी चुनौतियों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में याद करने की यह छोटी-सी कोशिश पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। भूमण्डलीकरण के दौर में भारतीय किसानों के समक्ष खड़ी चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा दूसरे खण्ड में की जायेगी। आखिर में अपनी बात को विराम देते हुए—

"हम आह भी भरते हैं, तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होती।"

—जयप्रकाश धूमकेतु